निरर्थक के लिए स्थान बनाना

मालविका राजनारायण

आप किसी बच्चे को टूटा हुआ बिस्कुट देकर देखिए। भले ही वह उसे आपसे ले ले, लेकिन वह उसके टूटे और बिगड़े हुए रूप को देखकर नाख़ुश होगा। मैं रोज़ चॉक के टुकड़ों, काग़ज़, पेंट बॉक्स, ब्रशों और पुराने अख़बार को लेकर इसी बात का सामना करती हूँ।

'टीचर, इस बॉक्स में सारे रंग नहीं हैं!'

'टीचर, यह काग़ज़ कोने से फटा हुआ है।'

'टीचर, यह क्रेयॉन टूटा हुआ है।'

'टीचर, यह चॉक का टुकड़ा छोटा है, मुझे बड़ा टुकड़ा चाहिए।'

'टीचर, मुझे बड़ा ब्रश चाहिए, जैसा आपने उसे दिया है।'

हमारा जीवन पेंट बॉक्स की तरह परिपूर्ण नहीं है जिसमें हर रंग की टिकिया बराबर हो। क्या स्कूल हमें आदर्श समानता का अनुभव कराते हैं, या वे हमें सम्वेदना और समझ के साथ एक असमान और अपूर्ण दुनिया को स्वीकार करने के लिए तैयार करते हैं? कला हमें प्रश्न पूछने और हमारी मौजूदा धारणाओं को बदलने में सहायता कर सकती है ताकि हम उसे दूसरों के साथ साझा कर सकें। जो कुछ हमारे पास है, उसकी सहायता से हम सुन्दर चीज़ें बनाने का प्रयास करते हैं और प्रामाणिक रूप से अपनी आवाज़ दूसरों तक पहुँचाते हैं। मैं कक्षा में इस आशा के साथ आपसी बातचीत के अवसर पैदा करने की कोशिश करती हूँ कि इससे दूसरों के साथ काम करने और सीमाओं के भीतर काम करने की इच्छा और क्षमता को बढ़ावा मिले; मैं उन्हें बहस और मतभिन्नता का मुक़ाबला करने तथा मुद्दों पर चर्चा करके उन्हें हल करने के मौक़े भी देती हूँ। इन सबके चलते वे किस तरह की चित्रकला करते हैं? कुछ अस्पष्ट लेखन, रंगों के कुछ छींटे, कभी-कभी अपने परिवेश

का प्रतिबिम्ब, किसी डिज़ाइन का विवरण, अपनी यादों की एक झलक और कुछ काल्पनिक। जब इनकी तुलना वर्णमाला को पढ़ने, शब्दों, कहानियों, तथ्यों और इतिहास को सीखने, परीक्षा देकर नौकरी पाने आदि से की जाती है तो ये चीज़ें कुछ ख़ास नहीं लगतीं। किसी ऐसी गतिविधि के लिए पेंट-बॉक्स से सम्बन्धित बहस में समय लगाना जिसमें 'सुरक्षित नौकरी और नियमित कमाई' की अधिक सम्भावना नहीं है' वाकई महत्त्वहीन बात लगती है।

लेकिन मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि अगर बच्चों को विभिन्न रंगों, रूपों, ध्वनियों और संस्कृतियों से रूबरू करवाया जाए तो क्या उन्हें विभिन्न वर्णों और विभिन्न आकार वाले शरीरों में सौन्दर्य देखने में मदद मिलेगी और क्या वे इन विविधताओं के साथ कार्य करने के लिए तैयार होंगे? अगर उन्हें यह बात न सिखाई जाए कि 'बिल्ली का चित्र कैसे बनाना चाहिए' तो हो सकता है कि वे अपने स्वयं के तरीक़े खोज लें और न सिर्फ़ एक सामान्य बिल्ली का चित्र बनाना सीख जाएँ बल्कि नीले कॉलर वाली उस बिल्ली का चित्र भी बना लें जो हमारे स्कूल में घूमती है या फिर उस बिल्ली का चित्र जो उनके घर के पास रहती है। अगर हज़ार अलग-अलग तरह की संस्कृतियों और स्थानों वाली बिल्ली के हज़ार अलग-अलग तरह के निरूपण एक-दूसरे को यह सम्प्रेषित कर सकते कि ये सभी बिल्लियों के चित्र हैं तो यह कितनी सुन्दर बात है। यह केवल कला की बात नहीं है, लेकिन इससे जो समझदारी पैदा होती है और जो ज्ञान यह साझा करती है, वह सबसे सुन्दर है। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को समझने के इन्हीं प्रयासों से कला उत्पन्न होती है; जब यह सार्वभौम के साथ विलीन होने के लिए पनपती है। बच्चों की कला में इस सार्वभौमिकता का गुण है जो उनके बड़े होने के साथ धूमिल होता जाता है। वे हम वयस्कों को दुनिया देखने के वे तरीक़े बताते हैं जिन्हें हम भूल चुके हैं।

कक्षाएँ केवल कुछ प्रकार के अधिगम के लिए सुविधाजनक हैं। यह बच्चों का सहज स्वभाव है कि उन्हें से कक्षा से बाहर रहना अच्छा लगता है। स्कूल के अधिकतर समय में कक्षा एक भौतिक सन्दूक के रूप में कार्य करती है जिसके भीतर बच्चे यह महसूस करते हैं कि वे स्कूल से जुड़े हुए हैं। कक्षा के भीतर उनकी गतिविधियों के प्रबन्धन का सबसे सरल उपाय यह है कि कक्षा के बाहर के स्थान को 'अवांछनीय' बना दिया

कक्षा 2 के विद्यार्थी द्वारा काग़ज़ पर वॉटर कलर से की गई चित्रकारी, 2017

जाए, इसलिए हम में से बहुत से शिक्षक/सुगमकर्ता कभी-कभी बच्चों से यह कहते हैं कि अगर वे कक्षा में गड़बड़ी करेंगे तो उन्हें बाहर भेज दिया जाएगा। बच्चे इस अनुकूलन को शीघ्र ही अपना लेते हैं। बच्चों की कक्षा के बाहर निकलने की प्रवृत्ति स्कूल के दौरान किसी भी विषय की कक्षा में कभी भी प्रकट

कक्षा 3 के विद्यार्थियों द्वारा समूह कार्य

हो सकती है और शिक्षकों व सुगमकर्ताओं के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। कला की हर कक्षा में मैं इसका सामना करती हूँ लेकिन बतौर कलाकार मुझे इसी बात ने बहुत लुभाया भी है। एक कक्षा में मैंने बहुत ईमानदारी के साथ कुछ बच्चों से आग्रह किया कि वे बाहर जाएँ और पाँच मिनट टहलकर कक्षा में वापस आ जाएँ और यह सज़ा नहीं है, सिर्फ स्थान परिवर्तन तथा चारों ओर एक चक्कर लगाने की स्वतंत्रता है; लेकिन फिर भी बच्चों को लगा कि मैं उन्हें सज़ा दे रही हूँ। जब कभी बच्चों ने कक्षा में अशान्ति फैलाई या दूसरे बच्चों के साथ मारपीट की तो मैंने उन्हें बाहर भेजने की कोशिश की और यह पाया कि कुछ समय के बाद वे अपने आप कक्षा में लौट आते हैं और पहले की तुलना में शान्त हो गए होते हैं। एक बार तो एक बच्चा दरवाज़े की बजाय खिड़की से अन्दर आया, तो एक अन्य बच्चा एक बिल्ली को देखने के लिए खिड़की से बाहर कूद गया। वैसे खिड़की की ऊँचाई बहुत अधिक नहीं है और इसलिए वहाँ से आने-जाने में ख़तरे की कोई बात नहीं है, और दोनों बार मुझे ऐसा कोई वैध कारण नहीं मिला कि मैं बच्चों के बाहर-अन्दर आने-जाने पर कोई आपत्ति करूँ, बल्कि मुझे तो उनकी स्वतंत्रता व साहस की भावना और खिलन्दड़ स्वभाव देखकर ख़ुशी हुई। मैं अक्सर सोचती हूँ कि 'कक्षा से ब्रेक/अन्तराल लेने' को एक अलग रूप दिया जा सकता है। एक बार कक्षा में कुछ बच्चे अपना काम पूरा कर लेने के बाद दूसरे बच्चों को परेशान करने लगे तो मैंने उनसे बाहर जाकर पेड़-पौधे देखकर आने को कहा। बच्चे बहुत उत्साहित हुए और बाक़ी के बच्चे भी अपना काम जल्दी से ख़त्म करके 'बाहर जाकर पेड़-पौधे देखने' के लिए लालायित हो गए! किसी संरचित वातावरण से छूटकर बाहर निकलना, खिलन्दड़ होना और जोखिम उठाना आदि ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं जो कल्पना और रचनात्मकता का पोषण करती हैं।

इन अनुभवों के कारण मेरे अन्दर उन अवज्ञाकारी बच्चों के कामों के बारे में जिज्ञासा पैदा हो गई है जो कक्षा के काम में 'बाधा' डालते हैं। मेरी चुनौती इस बात में है कि मैं उनकी उसी ऊर्जा को सावधानीपूर्वक एक ऐसी दिशा की ओर बढ़ाऊँ जिससे वे उसका प्रयोग अपनी रुचि की गतिविधियों या विचारों के विकास में करें, ताकि वे अपनी अनूठी विकास पद्धति के अनुरूप तरीक़ों से अपने अधिगम को संवर्धित करने के लिए स्व-प्रेरित हो सकें। जो विद्यार्थी इतने अवज्ञाकारी नहीं हैं, उन्हें मैं इस बात के लिए प्रोत्साहित करती हूँ कि वे 'आज्ञाकारिता' के रवैये से निकलकर प्रश्न पूछने और खोज करने की एक स्वस्थ स्थिति में आ जाएँ। उदाहरण के लिए कक्षा 5 और 6 के कुछ विद्यार्थी विचारों को समझने में विशेष रूप से तेज़ हैं, शिक्षित परिवारों से होने के कारण उनके पास जानकारी के व्यापक साधन हैं लेकिन ईमानदारी के साथ किसी किताब

कक्षा 5 के विद्यार्थी द्वारा काग़ज़ पर पेंसिल और स्केच पेन से पत्ते की ड्राइंग और पैटर्निंग अभ्यास, 2017

से चित्र की नक़ल करके और उसमें रंग भरकर वे अपनी क्षमताओं और कौशलों को साबित करने की ज़रूरत महसूस करते हैं। मैं उनके कौशलों की सराहना करती हूँ लेकिन साथ ही उनके साथ इन विषयों पर चर्चा भी करती हूँ जैसे व्यक्तिगत विचारों और अभिव्यक्ति का महत्त्व, हम इसे कैसे पा सकते हैं; और यह कि उनका प्रत्येक दृष्टिकोण उनके मन के विकास और उनकी संस्कृति के विकास के लिए प्रभावकारी और लाभकारी है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन चर्चाओं से उनके अपने आत्मविश्वास और कुछ नया करने की उनकी कोशिशों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वे अपनी चीज़ों का महत्त्व समझने लगे हैं, हम इन बातों पर भी चर्चा करते हैं कि कला की कक्षा में हम पुराने अख़बारों का पुनःचक्रण क्यों करते हैं, हम पुराने स्केच पेनों का उपयोग करके अन्य वस्तुएँ कैसे बना सकते हैं और हर विवेकपूर्ण कार्य प्रकृति के संरक्षण में किस प्रकार योगदान कर सकता है।

'आप चित्र क्यों बनाते हैं?' एक दिन मैंने अपनी पाँचवीं कक्षा में पूछा।

'ताकि हम चित्र बनाना सीख लें', एक विद्यार्थी ने कहा।

'इससे जीवन में आपको कैसे मदद मिलती है?', मैंने फिर पूछा।

'टीचर, आप तो सवाल पर सवाल पूछ रही हैं!', एक बच्चे ने शिकायत की।

'अगर हम चित्र बनाना सीख लें तो हम पैसे कमा सकते हैं... मैंने देखा है कि फ़िल्मी पोस्टर बनाए जाते हैं और जो लोग इन्हें बनाते हैं उन्हें इसके पैसे मिलते हैं', दूसरे ने कहा।

'आपने जिस फ़िल्मी पोस्टर को देखा वह कितना बड़ा था? क्या आप बता सकते हैं कि वह तकरीबन कितने फ़ीट/मीटर का था?'

'इतना बड़ा' - उसने अपने हाथ फैलाकर उस पोस्टर का आकार बताने की कोशिश की - 'पर मुझे यह नहीं पता कि वह कितने फ़ीट का था।'

'क्या वह इस दीवार जितना बड़ा था? आपको क्या लगता है कि आपकी कक्षा कितनी बड़ी है?'

'50 फ़ीट!',एक बोला।

नहीं, 20 फ़ीट, दूसरा बोला।

'नहीं, 60 फ़ीट!', एक अन्य बोला।

'100 फ़ीट!', एक लड़की चिल्लाई।

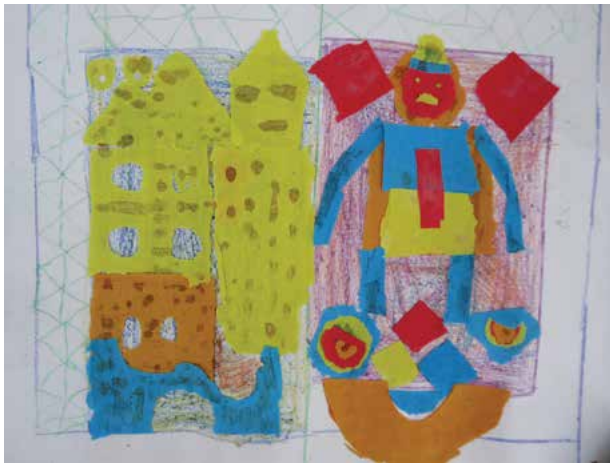

कक्षा 6 के विद्यार्थियों द्वारा काग़ज़ पर कोलाज, 2017

'सौ फ़ीट? आप उसे नापकर क्यों नहीं देखतीं?' मैंने कहा।

उसने एक पैमाना लिया और नापना शुरू कर दिया। पहले लम्बाई फिर चौड़ाई। फिर उसने वे संख्याएँ बोर्ड पर लिखीं और उन्हें जोड़ दिया।

'आप इन्हें जोड़ क्यों रही हैं?', मैंने पूछा।

'पूरे आकार का पता लगाने के लिए - ओह, मुझे इन्हें घटाना चाहिए था!', उसने कहा।

'नहीं, नहीं, हमें इन्हें जोड़ना चाहिए!' किसी और ने कहा।

‘टीचर, आप हमें चित्रकला सिखाने आई हैं या गणित?’, एक लड़के ने पूछा जो जाहिर तौर पर अधीर हो रहा था और ड्राइंग शुरू करना चाहता था।

‘शायद किसी दिन हम कक्षा की इस दीवार पर एक बड़ी पेंटिंग बनाने की बात सोचें। अभी आपको मोटे तौर पर पता है कि आपको अपनी पुस्तक के एक पृष्ठ के लिए कितना रंग चाहिए। तो हमें इस दीवार के लिए कितने पृष्ठों की ज़रूरत पड़ेगी?’

‘हमें नापने पर जो संख्याएँ मिलीं, उन्हें गुणा करना होगा!!’, वे खुशी से चिल्लाए क्योंकि उन्होंने एक ऐसी बात का पता लगा लिया था जिसके बारे में पहले नहीं जानते थे।

कला जीवन का अभिन्न अंग है और इसे अधिगम के एक महत्त्वपूर्ण तरीक़े के रूप में देखा जाना चाहिए। कला सम्बन्धी वस्तुएँ और कलाकृतियाँ एक बड़ी प्रक्रिया का सहायक परिणाम हैं। ज्ञान की खोज और दुनिया की समझ कला में उतनी ही अभिप्रेरक है जितनी कि विज्ञान या दर्शन में। किसी भी संस्कृति के सार्थक विकास के लिए इस बात को मान्यता देना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मालविका राजनारायण पेशेवर विजुअल आर्टिस्ट हैं और फेलोशिप कार्यक्रम के तहत यादगीर, कर्नाटक के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में कला संसाधिका के रूप में कार्यरत हैं। कर्नाटक चित्रकला परिषद, बेंगलूरु के पेंटिंग विभाग से स्नातक की उपाधि पाने के बाद उन्होंने एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा के फाइन आर्ट संकाय से पेंटिंग में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उनसे malavika.rajnarayan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल